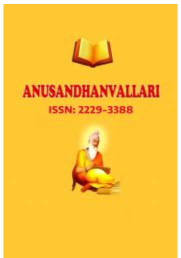

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1s
January 2025
ISSN 2229-3388

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन

[1]मुकेश बड़ाई'ए [2]डॉ. कल्पना सेन्गर

[1]शोधाथी, शिक्षा विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

[2]शोध पर्यवेक्षक, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

Corresponding Author: mkhangar148@gmail.com

शोध सार

इस अध्ययन का उद्देश्य टोंक जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा किए जाने वाले समायोजन स्तर की जांच करना है। समायोजन का तात्पर्य किसी के पर्यावरण के अनुकूल होने और व्यक्तित्व में एक गतिशील संतुलन बनाए रखने की प्रक्रिया से है। यह एक विद्यार्थी के जीवन के विभिन्न पहलुओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन में समायोजन के सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षिक प्रमुख क्षेत्रों में विद्यार्थियों के समायोजन स्तरों का आकलन करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। टोंक जिले के विभिन्न उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 624 विद्यार्थियों के न्यादर्श का चयन अध्ययन के लिए किया गया। उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए समायोजन सूची ए.के.पी. सिन्हा और आर.पी सिंह द्वारा मानकीकृत उपकरण का उपयोग अनुसंधान उपकरण के रूप में किया गया। एकत्रित ऑकडों का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों जैसे माध्य, मानक विचलन और टी मान का उपयोग करके किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के बीच समायोजन के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है, छात्र एवं छात्राओं के बीच शैक्षिक समायोजन के स्तर में सार्थक अंतर पाया जाता है, जबकि कुल समायोजन एवं उसके आयामों यथाः सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है ।

मुख्य शब्दः – समायोजन, सामाजिक समायोजन, भावनात्मक समायोजन, शैक्षिक समायोजन, लिंग।

1.0 प्रस्तावना–

आज की तेजी से बदलती दुनिया में, समायोजन मानव व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पहलू है। एक व्यक्ति जो अपने आसपास के वातावरण के अनुकूल नहीं हो सकता है, वह एक अच्छी तरह से व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए संघर्ष कर सकता है। एक लचीले और अनुकूल प्रकृति वाला व्यक्ति एक संतोषजनक और संतुष्ट जीवन जी सकता है, जबकि जिसे समायोजन करने में कठिनाई होती है, वह तनाव और असंतोष का अनुभव कर सकता है। समायोजन एक सतत प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने परिवेश में समस्याओं

का सामना करने के लिए विशिष्ट व्यवहार एवं रणनीतियाँ सीखते हैं, जिससे वे अपने पर्यावरण के साथ सामंजस्य प्राप्त कर सकते हैं।

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी किशोर अवस्था के होते हैं, उनके लिए यह एक चुनौतीपूर्ण और तनावपूर्ण अवस्था होती है। जबकि किशोर अवस्था का जीवन महत्वपूर्ण परिवर्तनों से भरा एक रोमांचक दौर है, इसके लिए विद्यार्थियों को व्यक्तिगत परिवर्तनों और बदलते सामाजिक–भावनात्मक वातावरण के अनुकूल होने की भी आवश्यकता होती है।

हाल के वर्षों में, उच्च माध्यमिक कक्षाओं में जाने के दौरान किशोरों के सामने आने वाली चुनौतियों पर अधिक ध्यान दिया गया है। सामाजिक–भावनात्मक कठिनाइयाँ अक्सर इस चरण के साथ होती हैं, जिससे यह तथ्य सामने आता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के बहुत से विद्यार्थी किसी बिंदु पर पढ़ाई छोड़ देते हैं। जीवन, काम और रिश्तों के संबंध में समाज की कई निराशाएँ अवास्तविक अपेक्षाओं से उपजी हैं।

समायोजन एक अंतर्निहित तंत्र के रूप में कार्य करता है जो व्यक्तियों को जीवन की चुनौतियों से निपटने में मदद करता है। इसे सामाजिक सद्भाव का एक संकेतक माना जाता है, जो एक व्यक्ति को समाज में अच्छी तरह से एकीकृत होने और एक अच्छी तरह से समायोजित व्यक्ति के रूप में पहचाने जाने में सक्षम बनाता है। आधुनिक समाज में, जीवन तेजी से जटिल और विरोधाभासों से भरा हो रहा है। केवल वे लोग जो प्रभावी ढंग से अनुकूलन कर सकते हैं, मनोवैज्ञानिक तनाव से बच सकते हैं, यदि ये समायोजित नहीं हो पाते है, तो यह कुसमायोजन का कारण बन सकते है। किशोरावस्था के दौरान समायोजित करने की क्षमता किसी व्यक्ति के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस चरण को अक्सर तीव्र तनाव और उथल–पुथल की अवधि के रूप में वर्णित किया जाता है, जो तेजी से शारीरिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों के कारण होता है। इन विकासात्मक चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने से खुशी मिलती है और व्यक्तियों को भविष्य की सफलता के लिए तैयार करती है, जबकि असफलता से असंतोष हो सकता है और व्यक्तिगत विकास में बाधा आ सकती है।

2.0 समस्या कथन –

" उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन "

3.0 संबंधित साहित्य की समीक्षा

हुसैन, अनवर और बेगम,जेरिना (2025) ने अपने शोध शीर्षक किशोर लड़कियों के समायोजन स्तर, माता–पिता की आय और शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन में बताया कि समायोजन एक व्यवहारिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव और अन्य जानवर अपनी आवश्यकताओं और अपने पर्यावरण की बाधाओं के बीच संतुलन बनाए रखते हैं। समायोजन की प्रगति मांग महसूस होने पर शुरू होती है और संतुष्टि पर समाप्त होती है। किशोरावस्था मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक समय है। यह शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विकास का काल है जिसमें संज्ञानात्मक, प्रभावी, सामाजिक और शैक्षणिक परिवर्तन शामिल हैं। उनमें से अधिकांश के सामने समायोजन करने और उन चुनौतियों से निपटने में अविश्वसनीय चुनौतियाँ हैं। ये उनकी मानसिक स्थिति पर असर डाल सकते हैं, जिससे मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की आशंका बढ़ सकती है। किशोरावस्था में समायोजन की समस्याएँ अस्वस्थ घरेलू

परिस्थितियों, नकारात्मक माता–पिता के रवैये, घर और परिवार के माहौल आदि का परिणाम हो सकती हैं। इन स्थितियों के कारण किशोर को समायोजन समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वर्तमान अध्ययन मध्य असम के दो जिलों की ग्यारहवीं कक्षा की किशोर छात्राओं के घरेलू समायोजन, सामाजिक, स्वास्थ्य और भावनात्मक आयामों के अंतर को देखने के लिए किया गया था। किशोरियों के समायोजन को मापने के लिए डॉ. आर.के. ओझा द्वारा बेल्स एडजस्टमेंट इन्वेंटरी का संचालन किया गया। इस अध्ययन के लिए सोनितपुर और मोरीगांव जिले के प्रत्येक सरकारी माध्यमिक विद्यालय से 44 महिला किशोर छात्रों को यादृच्छिक रूप से चुना गया था। माध्य, एसडी, आवृत्तियों और प्रतिशत जैसे आँकड़ों का उपयोग किया गया था। समायोजन के चार आयामों और समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों पर दो जिलों की किशोर छात्राओं के बीच महत्वपूर्ण अंतर खोजने के लिए टी–टेस्ट का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया गया। छात्रों के मैट्रिक परीक्षा परिणाम को शैक्षणिक उपलब्धि माना गया। निष्कर्षों से पता चला कि महिला छात्रों के दो जिलों के बीच कुल समायोजन के साथ–साथ स्वास्थ्य और भावनात्मक समायोजन स्तर और शैक्षणिक उपलब्धि के मुकाबले समायोजन स्तर, और माता–पिता की आय और शैक्षणिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर हैं। दोनों जिलों की किशोरियों के घरेलू और सामाजिक समायोजन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

राजपूत, प्रिया और इंदु बाला (2023) ने किशोरों के बीच शैक्षिक समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध शीर्षक पर शोध का अध्ययन किया। इस शोध का उद्देश्य सोनीपत में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षिक समायोजन के बारे में अधिक जानना था। अध्ययन में लिंग और स्कूल के प्रकार के संदर्भ में शैक्षिक समायोजन की जांच करने का भी प्रयास किया गया। नमूने में कुल 100 माध्यमिक विद्यालय के छात्र शामिल थे, जिनमें से 50 लड़के और 50 लड़कियाँ थीं जो सोनीपत के निजी और सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे थे। रानी और सिंह (2014) द्वारा शैक्षिक समायोजन सूची का उपयोग शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर के लिए किया गया था, जो छात्रों के नौवीं कक्षा के अंतिम परीक्षा स्कोर से लिया गया है। माध्य, एसडी और 'टी' परीक्षणों की गणना की जा रही थी। परिणाम से पता चला कि शैक्षिक समायोजन सूची मैनुअल के मानदंडों के अनुसार माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का समायोजन स्तर औसत से ऊपर था। यह भी देखा गया कि सोनीपत में बालिका माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का शैक्षिक समायोजन लड़के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों से अधिक है और निजी और सार्वजनिक दोनों, सोनीपत में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षिक समायोजन में कोई खास अंतर नहीं है। यह भी पाया गया कि निजी स्कूलों में पढ़ने वाली छात्राओं और छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि उनके समकक्ष पुरुष और सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की तुलना में अधिक पाई गई। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच शैक्षिक समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक संबंध भी देखा गया।

चौधरी और वर्मा (2022) ने प्रथम वर्ष के कॉलेज के विद्यार्थियों में शैक्षिक समायोजन पर सहकर्मी समर्थन के प्रभाव पर एक अध्ययन किया। उत्तर प्रदेश के तीन विश्वविद्यालयों के 150 विद्यार्थियों के एक न्यादर्श ने अध्ययन में भाग लिया। परिणामों से पता चला कि मजबूत सहकर्मी समर्थन नेटवर्क वाले विद्यार्थियों ने बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन, पाठ्येतर गतिविधियों में अधिक भागीदारी और शैक्षणिक तनाव के निम्न स्तर का प्रदर्शन किया।

हेमंत कुमार बंकर (2021) ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन स्तरों की जांच की। अध्ययन में अहमदाबाद जिले, गुजरात के दो स्कूलों के 120 उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का न्यादर्श लिया गया था, जिसमें ए.के.पी. सिन्हा और आर.पी सिंह (2007)द्वारा

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1s
January 2025
ISSN 2229-3388

विकसित स्कूल समायोजन सूची का उपयोग किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के बीच भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षिक समायोजन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों के समायोजन स्तरों पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

शोध अन्तराल

शोधकर्ता ने साहित्यिक सर्वेक्षण के दौरान यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि सम्बन्धित क्षेत्र में शोधकार्य अल्प मात्रा में ही हुए हैं। समायोजन एक ऐसा सम्प्रत्यय है जो छात्रों के मानसिक पक्षों एवं उनके आनुभाविक पक्षों के समन्वय से विकसित होता है। अतः प्रस्तुत शोध समस्या का चयन किया जाना सर्वथा उचित एवं उपयोगी है क्योंकि उच्च माध्यमिक स्तर बालक के किशोरावस्था का काल होता है। इस काल को बालक के जीवन का निर्माण काल माना जाता है। इस अवस्था में जिन गुणों, आदतों एवं मनोवृत्तियों का निर्माण हो जाता है उसका अमिट प्रभाव बालक के जीवन पर पड़ता है।

4.0 अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोधकार्य निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित रहा –

1. उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन में क्षेत्रीय भिन्नता के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन में लैंगिक भिन्नता के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

5.0 अध्ययन की परिकल्पनाएँ –

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा संबंधित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर निम्नलिखित सम्भावित परिकल्पनाओं पर कार्य किया गया –

H_0^1उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियो के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_0^2उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

6.0 वर्तमान शोध में न्यादर्श

जनसंख्या :– प्रस्तुत शोध में जनसंख्या से अभिप्रायः उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थियों की संख्या से है।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रतिदर्श के लिये राजस्थान राज्य के टोंक जिले को चुना गया इसके अन्तर्गत 24 उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन शोधकार्य हेतु किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 26 विद्यार्थियों का चयन शोधकार्य हेतु किया गया। इस प्रकार कुल 624 विद्यार्थियों का चयन किया गया। न्यादर्श चयन हेतु शोधकर्ता द्वारा सरल यादृच्छिकीय विधि का प्रयोग किया गया, इसके अन्तर्गत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिकीय विधि से किया गया।

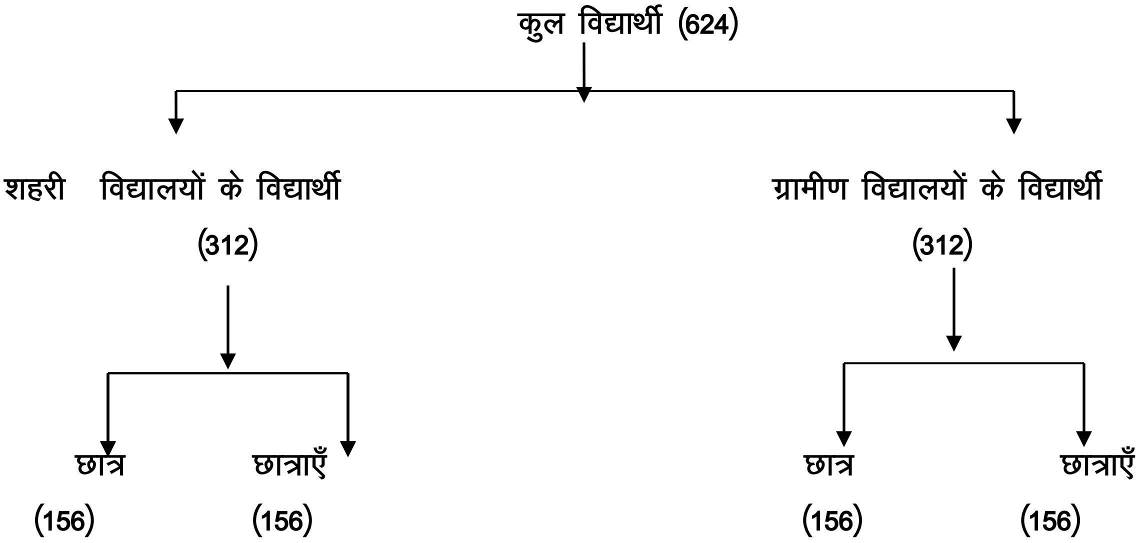

न्यादर्श का विवरण

7.0 शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए समायोजन से सम्बन्धित तथ्यों के संकलन हेतु प्रो. आर.पी. सिंह और के. पी. सन्हा द्वारा निर्मित प्रमापीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया।

8.0 अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

9.0 सांख्यिकीय तकनीकें

निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का उपयोग डेटा विश्लेषण के लिए किया गया :

- माध्य
- मानक विचलन

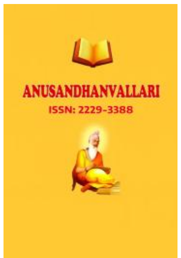

- टी– मान

10.0 अध्ययन की परिसीमाएँ

- वर्तमान अध्ययन केवल राजस्थान राज्य के टोंक जिलें तक ही सीमित रखा गया।
- अध्ययन हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को चुना गया।
- न्यादर्श के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के 624 बालकों का चयन किया गया, जिनमें 312 ग्रामीण एवं 312 शहरी क्षेत्र से लिए गये।
- अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

11.0 ऑकड़ों का विश्लेषण

11.1 परिकल्पना संख्या 1 : ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता।

सारणी संख्या 1.0

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

समायोजन एवं उसके आयाम	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मान
कुल समायोजन	ग्रामीण	312	37ण00	4ण411	0.232
	शहरी	312	37ण08	4ण226	
संवेगात्मक समायोजन	ग्रामीण	312	12ण61	2ण281	0.249
	शहरी	312	12ण66	2ण227	
सामाजिक समायोजन	ग्रामीण	312	11ण54	2ण743	0.765
	शहरी	312	11ण70	2ण696	
शैक्षिक समायोजन	ग्रामीण	312	12ण85	2ण202	0.768
	शहरी	312	12ण72	2ण070	

'0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक''0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1s
January 2025
ISSN 2229-3388

आरेख संख्या 1.0

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन के कारकों के मध्यमान

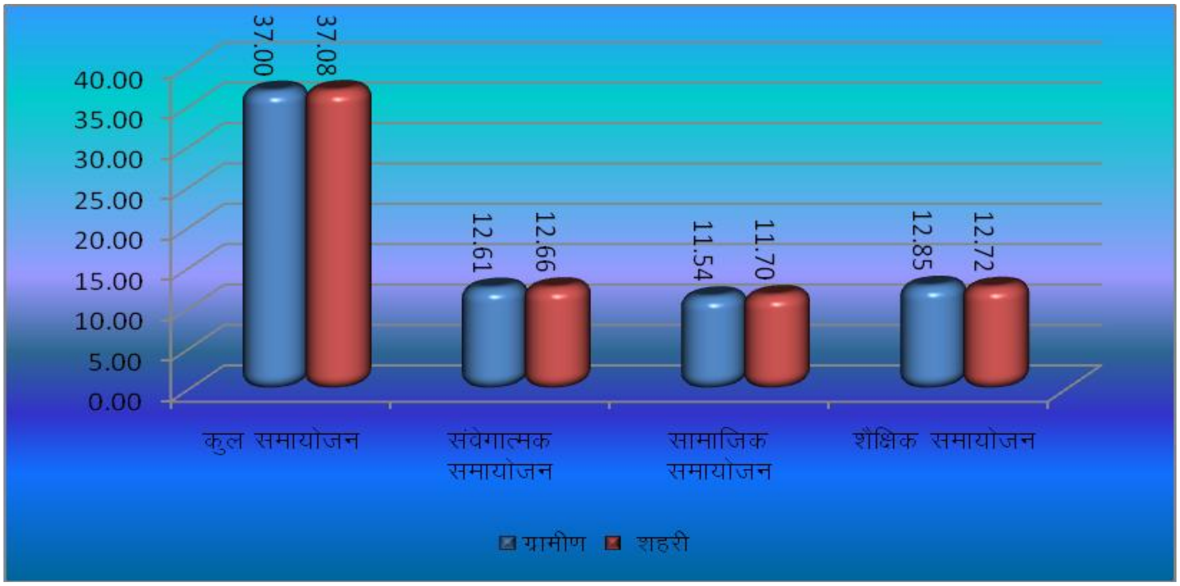

उपरोक्त सारणी संख्या 1.0 से परिलक्षित होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की समायोजन प्रमापनी से ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के कुल समायोजन के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 37.00 तथा 4.411 है तथा उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन प्रमापनी से शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के कुल समायोजन के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 37.08 तथा 4.226 है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन के प्राप्तांकों के मध्यमानों की तुलना करने पर शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्यमान का मान ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्यमान से कुछ अधिक प्राप्त हुआ। लेकिन समायोजन प्रमापनी के मानदण्डानुसार निम्न प्राप्तांक वाले न्यादर्श का समायोजन उच्च एवं अधिक प्राप्तांक वाले न्यादर्श का समायोजन निम्न समायोजन को प्रदर्शित करता है। अतः ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के कुल समायोजन स्तर का मान शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से अधिक है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन के प्राप्तांकों के मध्यमानों की तुलना करने पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्यमानों के अन्तर का टी–मान 0.232 हैं जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सैद्धान्तिक टी–मान से कम है। इसलिए शोध की परिकल्पना संख्या– 1 कुल समायोजन के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती है जिसके अनुसार ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

उपरोक्त सारणी संख्या 1.0 से परिलक्षित होता है उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन प्रमापनी में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन के प्रथम आयाम ''संवेगातमक सामायोजन '' के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 12.61 तथा 2.281 है। तथा शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन के प्रथम आयाम ''संवेगातमक सामायोजन'' के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 12.66 तथा 2.227 है। ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्यमानों की तुलना करने पर शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्यमान का मान ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मध्यमान से आंशिक अधिक प्राप्त हुआ। लेकिन समायोजन प्रमापनी के मानदण्डानुसार उच्च अंक अस्थिर संवेग को दर्शाते हैं। कम अंक वाले छात्र संवेगात्मक रूप से स्थिर होते हैं। अतः ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन के प्रथम आयाम ''संवेगातमक सामायोजन '' स्तर का मान शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से अधिक है। ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्यमानों के अन्तर का टी–मान 0.249 हैं जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सैद्वान्तिक टी–मान से कम है।

उपरोक्त सारणी संख्या 1.0 से परिलक्षित होता है उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन प्रमापनी में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन के द्वितीय आयाम ''सामाजिक समायोजन'' के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 11.54 तथा 2.743 है। तथा शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन के द्वितीय आयाम ''सामाजिक समायोजन'' के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 11.70 तथा 2.696 है। ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन के द्वितीय आयाम ''सामाजिक समायोजन'' के प्राप्तांकों के मध्यमानों की तुलना करने पर शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन प्रमापनी के द्वितीय आयाम ''सामाजिक समायोजन'' के प्राप्तांकों के मध्यमान का मान ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक प्राप्त हुआ। लेकिन सामाजिक समायोजन में : उच्च अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति विनम्र और श्रद्धावान होते हैं। कम अंक आक्रामक व्यवहार को दर्शाते हैं। अतः शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन के द्वितीय आयाम '' सामाजिक समायोजन ''स्तर का मान ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से अधिक है। ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्यमानों के अन्तर का टी–मान 0.765 हैं जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सैद्वान्तिक टी–मान से कम है।

उपरोक्त सारणी संख्या 1.0 से परिलक्षित होता है उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन प्रमापनी में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन के तृतीय आयाम '' शैक्षिक समायोजन'' के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 12.85 तथा 2.202 है। तथा शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन के तृतीय आयाम ''शैक्षिक समायोजन'' के प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 12.72 तथा 2.070 है। ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन के तृतीय आयाम ''शैक्षिक समायोजन '' के प्राप्तांकों के मध्यमानों की तुलना करने पर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन प्रमापनी के तृतीय आयाम ''शैक्षिक समायोजन'' के प्राप्तांकों के मध्यमान का मान शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के मध्यमान से आंशिक अधिक प्राप्त हुआ। लेकिन शैक्षिक समायोजन में उच्च अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति अपने पाठ्यक्रम और सह–पाठ्यचर्या कार्यक्रमों के साथ खराब तरीके से समायोजित होते हैं। कम अंक वाले व्यक्ति स्कूल कार्यक्रमों में रुचि रखते हैं। अतः शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन के तृतीय आयाम ''शैक्षिक समायोजन'' स्तर का मान ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से अधिक है।

ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्यमानों के अन्तर का टी–मान 0.768 हैं जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सैद्वान्तिक टी–मान से कम है।

11.2 परिकल्पना संख्या 2 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता।

सारणी संख्या 2.0

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में में समायोजन प्रमापनी के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

समायोजन एवं उसके प्रकार	लिंग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मान
कुल समायोजन	छात्र	312	36ण्71	4ण्357	1ण्868
	छात्राऍं	312	37ण्36	4ण्258	
संवेगात्मक समायोजन	छात्र	312	12ण्53	2ण्309	1ण्209
	छात्राऍं	312	12ण्74	2ण्193	
सामाजिक समायोजन	छात्र	312	11ण्63	2ण्723	0ण्147
	छात्राऍं	312	11ण्60	2ण्719	
शैक्षिक समायोजन	छात्र	312	12ण्55	2ण्124	2ण्693’’
	छात्राऍं	312	13ण्01	2ण्128	

’0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक’’0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

आरेख संख्या 2.0

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में समायोजन प्रमापनी के प्राप्तांकों के मध्यमान

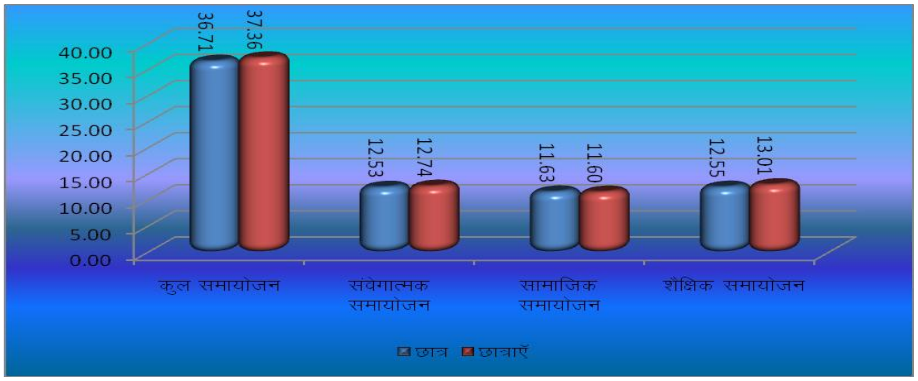

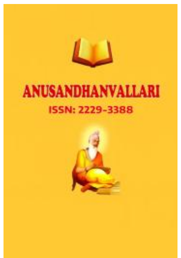

ANUSANDHANVALLARI
ISSN: 2229-3388

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1s
January 2025
ISSN 2229-3388

उपरोक्त सारणी संख्या 2.0 से परिलक्षित होता है कि द्वितीय आयाम सामाजिक समायोजन के अतिरिक्त कुल समायोजन एवं उसके आयामों यथाः संवेगात्मक समायोजन एवं शैक्षिक समायोजन में छात्राओं के प्राप्तांकों का मान छात्रों के प्राप्तांकों से अधिक हैं जबकि सामाजिक समायोजन में कम है। अतः छात्राओं में कुल समायोजन एवं उसके आयामों यथाः संवेगात्मक समायोजन एवं शैक्षिक समायोजन कम तथा सामाजिक समायोजन में अधिक पाया जाता हैं। शैक्षिक समायोजन में छात्र एवं छात्राओं के मान में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं। अतः परिकल्पना संख्या– 2 कुल समायोजन एवं उसके आयामों यथाः सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती है जबकि शैक्षिक समायोजन के सन्दर्भ में अस्वीकृत की जाती है ।

12.0 निष्कर्ष

- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में छात्रों एवं छात्राओं के कुल समायोजन एवं उसके आयामों यथाः सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता हैं। जबकि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में छात्रों एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर होता हैं।

13.0 शैक्षिक निहितार्थ –

वर्तमान अध्ययन का शिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों, पाठ्यक्रम फ्रेम और माता–पिता के लिए निहितार्थ है।

1. माता–पिता और शिक्षकों की पहली जिम्मेदारी यह होनी चाहिए कि वे उन क्षेत्रों को जानें जहां विद्यार्थियों में समायोजन की कमी है और हर क्षेत्र में उचित समायोजन के लिए बेहतर परिस्थितियां देने का प्रयास करें।

2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों का वातावरण सौहार्दपूर्ण और अनुकूल होना चाहिए।

3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में सह–पाठ्यचर्या गतिविधियों का उचित प्रावधान होना चाहिए।

4. माता–पिता को उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अपने बच्चों को भर्ती कराने से पहले विद्यालय के वातावरण और सुविधाओं का ज्ञान होना चाहिए।

5. प्रशासकों को अच्छी तरह से योग्य शिक्षकों एवं कर्मचारियों की नियुक्ति करनी चाहिए।

सन्दर्भ

[1] बिमला, (2019), कॉलेज जाने वाले विद्यार्थियों के समायोजन पर एक तुलनात्मक अध्ययन, जर्नल ऑफ एजुकेशनल मनोविज्ञान और अनुसंधान, 12(2), 45–58।

ANUSANDHANVALLARI
ISSN: 2229-3388

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1s
January 2025
ISSN 2229-3388

[2] चौधरी, आर., और वर्मा, पी. (2022), प्रथम वर्ष के कॉलेज विद्यार्थियों में शैक्षिक समायोजन पर सहकर्मी समर्थन का प्रभाव, जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन स्टडीज, 15(1), 78।

[3] जनार्दनम, एस, और विनायागा, आर. (2020), चित्तूर जिला, आंध्र प्रदेश में कॉलेज के विद्यार्थियों के बीच समायोजन, साउथ इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी, 8(2), 55–68। हुसैन, अनवर और बेगम,जेरिना,(2025),किशोर लड़कियों के समायोजन स्तर, माता–पिता की आय और शैक्षणिक उपलब्धि का एक तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड साइंटिफिक इनोवेशन (आईजेआरएसआई) (आईएसएसएन 2321–2705),खंड 12, अंक टप्प्, पृष्ठ संख्या 275–287।

[4] प्रियदर्शिनी, ए. और दवे, डी. (2021), राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के विज़न को साकार करने के लिए ओपन और डिस्टेंस लर्निंग के ज़रिए समग्र और बहुविषयक शिक्षा, रिसर्चगेट, यूनिवर्सिटी न्यूज़, 59(07) फ़रवरी।

[5] हुसैन, अनवर और बेगम,जेरिना,(2025),किशोर लड़कियों के समायोजन स्तर, माता–पिता की आय और शैक्षणिक उपलब्धि का एक तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड साइंटिफिक इनोवेशन (आईजेआरएसआई) (आईएसएसएन 2321–2705),खंड 12, अंक टप्प्, पृष्ठ संख्या 275–287।